अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना

हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की तरफ मनसूब एक वाक़िये की तहकीक

TEHQEEQI PAMPHLET NO. 2

अज़ान -ए- बिलाल और सूरज का निकलना

बेशतर अवाम की ज़ुबानों पर ये वाक़िया मशहूर है कि एक मर्तबा हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को अज़ान देने से रोका गया तो सूरज ही नहीं निकला। कई मुक़र्रिरीन इस वाक़िये को काफी मसाला लगाकर बयान करते हैं और बताते हैं कि हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की ज़ुबान में लुक्नत थी (यानी आप सही से बोल नहीं पाते थे) और इसी वजह से आप अज़ान में "शीन" को "सीन" पढ़ते थे। इस पर यहूदियों ने ताना दिया कि मुसलमानों ने ऐसा मुअज़्ज़िन रखा है जो सहीह से "शीन" भी नहीं कह पाता। जब सहाबा -ए- किराम को इसकी खबर हूई तो उन्होने रसूलुल्लाह ﷺ से शिकायत की और दूसरा मुअज़्ज़िन रखने की दरख्वास्त की।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ ने दूसरे शख्स को मुअज़्ज़िन मुक़र्रर फरमा दिया और अगले दिन जब उस मुअज़्ज़िन ने फजर की अज़ान दी तो सूरज ही नहीं निकला और सुबह नहीं हुई। जब सुबह नहीं हुई तो सब परेशान होने लगे। हज़रत उमर फारूक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुये और अर्ज़ करने लगे कि या रसूलल्लाह ﷺ बिस्तर पर करवट बदल बदल कर थक गया हूँ लेकिन सुबह नहीं हो रही है! आखिर ये माजरा क्या है? ये गुफ्तगू चल ही रही थी कि हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम तशरीफ ले आते हैं और हुज़ूर ﷺ से अर्ज़ करते हैं कि जब तक हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान नहीं देंगे तब तक सुबह नहीं हो सकती और हज़रत बिलाल की "सीन" ही अल्लाह त'आला के नज़दीक "शीन" है। फिर हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने अज़ान दी तो सुबह हुई।

इस रिवायत की हक़ीक़त :

ये रिवायत मौज़ू व मनघड़त है जैसा कि अल्लामा अबुल अहमद, मुहम्मद अली रज़ा क़ादरी अशरफ़ी हाफिज़हुल्लाह लिखते हैं कि अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि इस रिवायत की कोई असल नहीं है।

(البدایہ والنھایہ،ج5،ص139،ر5443)

अल्लामा सखवी रहीमहुल्लाह अल्लामा जमालुद्दीन मूज़ी के हवाले से लिखते हैं कि ये रिवायत आवाम की ज़ुबानों पर तो मशहूर है लेकिन हमने इसे किसी किताब में नहीं पाया।

(المقاصد الحسنہ،ص120،ر221)

अल्लामा सखवी मज़ीद लिखते हैं कि अल्लामा इब्ने कसीर कहते हैं कि इस रिवायत की कोई असल नहीं।

(ایضاً،ص255،ر582)

अल्लामा अब्दुल वह्हाब शारानी रहीमहुल्लाह ने भी इस रिवायत के बारे में लिखा है कि इसकी कोई असल नहीं।

(البدر المنیر،ص117،ر915)

आप रहीमहुल्लाह मज़ीद लिखते हैं कि अल्लामा इब्ने कसीर कहते हैं कि इसकी कोई असल नहीं।

(ایضاً،ص186،ر1378)

इमाम मुल्ला अली क़ारी रहीमहुल्लाह ने भी इस रिवायत को मौज़ू क़रार दिया है ।

(الموضوعات الکبیر،ر257،524)

अल्लामा बदरुद्दीन ज़रकशी रहीमहुल्लाह ने अल्लामा जमालुद्दीन मूज़ी और शैख बुरहानुद्दीन सिफक़सी का क़ौल नक़्ल किया है कि ये मशहूर तो है लेकिन किताबों में ऐसा कुछ भी नहीं है।

(اللآلی المنثورة فی الاحادیث المشہورة، ص207،208)

अल्लामा इब्ने मुबरद मुक़द्दसी ने भी अल्लामा जमालुद्दीन मूज़ी के हवाले से लिखा कि किताबों में इस का वुजूद नहीं है।

(التخریج الصغیر، ص109،ر554)

अल्लामा इस्माईल बिन मुहम्मद अलजूनी ने मुल्ला अली क़ारी, इमाम सुयूती और अल्लामा जमालुद्दीन मूज़ी के हवाले से लिखा है कि इसकी कोई असल नहीं।

(کشف الخفاء...الخ،ج1،ص203،ر694)

अल्लामा अलजूनी मज़ीद लिखते हैं कि इब्ने कसीर कहते हैं कि इस रिवायत की कोई असल नहीं।

(ایضاً،ص411،ر1518)

इस रिवायत को और भी कई किताबों में तनक़ीद का निशाना बनाया गया है।

(دیکھیے: تمییز الطیب من الخبیث، تذکرۃ الموضوعات للھندی، الدرر للسیوطی، الفوائد للکرمی، اسنی المطالب وغیرہ)

शारेह बुखारी, हज़रत मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि तमाम मुहद्दिसीन का इस पर इत्तिफाक़ है कि ये रिवायत मौज़ू मनघड़त और बिल्कुल झूट है।

(انظر: فتاوی شارح بخاری، ج2، ص38)

बहरुल उलूम, हज़रत अल्लामा मुफ्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को अज़ान से माज़ूल करने का ज़िक्र हम को नहीं मिला बल्कि "अयनी" में है कि हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु सफर और हज़र हर दो हाल में अज़ान दिया करते थे।

(انظر: فتاوی بحر العلوم، ج1، ص109)

फतावा मरकज़े तरबियत -ए- इफ्ता में है कि ये रिवायत मौज़ू व मनघड़त है।

(انظر: فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص647)

हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की फसाहत :-

इस वाक़िये में जो बयान किया गया है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की जुबान में लुक्नत थी, ये किसी भी तरह क़ाबिले क़ुबूल नहीं क्योंकि हमारे पास कई दलाइल हैं जिस से हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की फसाहत साबित होती है।

चुनाँचे,

नबी -ए- करीम ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन जैद अंसारी से इरशाद फरमाया कि बिलाल तुमसे ज़्यादा साफ और ऊँची आवाज़ वाला है।

(انظر: الجامع الترمذی، ص69، ر189–والسنن الکبری، ج1، ص733، ر1835–وایضاً، ج1، ص798،
ر2006–واسد الغابہ، ج2، ص672–وکنزالعمال، ج7، ص283، ر20948–ومسند امام احمد، ج4، ص43،
ر16592–وصحیح ابن حبان، ص532، ر1679–والسنن لابی داؤد، ص111، ر499–والسنن الابن ماجہ،
ص122، ر706–وصحیح ابن خزیمہ، ج1، ر373–والسنن للدارمی، ج1، ص286، ر1187–والسنن للدارقطنی،
ج1، ص241؛ بہ حوالہ جمال بلال)

इस रिवायत से साबित होता है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फसीहुल लिसान थे और इसलिये हुज़ूर ﷺ ने आप को अज़ान देने का हुक्म इरशाद फ़रमाया और ये जो कहा जाता है कि आप की ज़ुबान में लुक्नत थी, ये महज़ मनघड़त बात है।

इमाम सखवी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की फसीहुल लिसानी को अकसर अहले इल्म हज़रात ने बयान किया है।

(المقاصد الحسنہ، ص255)

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि हज़रत बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फसीहुल लिसान थे।

(البدایہ والنھایہ، ج5، ص139)

अल्लामा सालही दमिश्क़ी ने भी हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की फसीहत का ज़िक्र किया है।

(سبل الہدی والرشاد، ج11، ص415)

अल्लामा अलजूनी ने भी आपकी फसीहुल लिसानी का ज़िक्र किया है।

(كشف الخفاء...الخ،ج1،ص411،ر1518)

मज़कूरा दलाइल से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की आवाज़ बहत प्यारी थी। अगर आपकी ज़ुबान में लुक्नत होती तो नबी -ए- करीम ﷺ आप को अज़ान देने का हुक्म इरशाद ना फरमाते। एक हदीस में हुज़ूर ﷺ का इरशाद -ए- पाक है कि अज़ान मियाना रवी और सहूलत के साथ पढ़ने का नाम है चुनाँचे अगर तुम्हारी अज़ान में ये दोनों बातें नही तो तुम अज़ान ना दो।

(عمدۃ القاری،ج5،ص166–وسبل الہدی والرشاد،ج8،ص88–وکنز العمال،ج7،ص283،ر20948–وسنن دار قطنی)

यहाँ आप देखें कि हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ खुद इरशाद फ़रमा रहे हैं कि अज़ान देने वाले को कैसा होना चाहिये और अगर उस में ये बातें ना हों तो वो अज़ान ना दे और इमाम बदरुद्दीन अयनी फरमाते हैं कि ये हदीस उसके लिये है जिसके लहजे में फसाहत ना हो। जब खुद मेरे आक़ा ﷺ ये हुक्म दे रहे हैं तो कैसे मुमकिन है कि आप ﷺ एक ऐसे शख्स को अज़ान देने का हुक्म दें जिस की ज़ुबान में लुक्नत हो लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की ज़ुबान में लुक्नत नहीं थी।

सूरज ना निकलने वाली बात पर कुछ इश्कलात :-

इस रिवायत में जो बयान किया गया है कि जब हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने अज़ान नहीं दी तो सूरज नहीं निकला, इस पर कुछ इश्कलात पैदा होते हैं मसलन,

(1) ये बात भी सच है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अकेले ऐसे शख्स नहीं थे जो हुज़ूर ﷺ के दौर में अज़ान दिया करते थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मस्जिद -ए- नबवी में हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के इलावा हज़रते इब्ने उम्मे मकतूब रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को भी अज़ान देने के लिये मुक़र्रर फ़रमाया था और ये नाबीना सहाबी थे। यहाँ एक बात क़ाबिले गौर है कि अगर अल्लाह त'आला और उसके रसूल को ये बात नापसंद थी कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के इलावा कोई और अज़ान दे तो फिर दूसरे शख्स को मुअज़्ज़िन मुक़र्रर करने का क्या मतलब है?

(2) अज़ान और इक़ामत में कभी कभी ऐसा भी होता था कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान दिया करते और हज़रते इब्ने उम्मे मकतूब इक़ामत कहा करते तो कभी इसके बर अक्स हज़रते इब्ने उम्मे मकतूब अज़ान दिया करते और हज़रते बिलाल इक़ामत कह दिया करते।

(مصنف ابن ابی شیبہ، ج1، ص245- وطبقات ابن سعد، ج2، ص423)

अब हमें कोई ये बताये कि जब हज़रते बिलाल अज़ान देते थे तब तो ठीक मगर जब हज़रते इब्ने उम्मे मकतूब अज़ान देते थे तो सूरज कैसे निकल जाता था?

(3) गज़वा -ए- खैबर से वापसी पर ऐसा भी हुआ कि रात के वक़्त एक जगह पड़ाव डाला गया और हुज़ूर ﷺ ने हज़रते बिलाल को हुक्म दिया कि जागते रहना मगर थकावट की वजह से हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की

भी आँख लग गई हत्ता कि सूरज निकल आया। जब सूरज निकल आया तो सबसे पहले हुज़ूर ﷺ की आँख मुबारक खुली और फिर दूसरे मक़ाम पर क़ज़ा अदा की गई।

(انظر: صحیح مسلم، ص275، ر1560-وسبل الہدی والرشاد، ج8، ص90-ومسند احمد بن حنبل-وابوداؤد-و ترمذی-وابن ماجہ-وسنن الکبری-ودلائل النبوۃ-وابن ابی شیبہ-وطبقات ابن سعد-ومجمع الزوائد)

अब ये समझ से परे है कि उस दिन सूरज कैसे निकल आया हालाँकि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने उस दिन अज़ान ही नहीं दी।

(4) जब हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ का विसाल हो गया तो हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान और मदीना दोनों को छोड़कर मुल्के शाम चले गये। अब ये भी कोई बताये कि उन दिनों में सूरज कैसे निकल आया?

(5) आज जब हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान नहीं देते तो सूरज कैसे निकलता है?

(ماخوذ از جمال بلال رضی اللہ تعالٰی عنہ)

मज़कूरा दलाइल और इश्कलात की रौशनी में ये बात सूरज की तरह रौशन हो गई कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की तरफ मंसूब ये वाक़िया बे असल और मनघड़त है।

हमें चाहिये कि ऐसी रिवायत को बयान ना करें और दूसरों की भी इस्लाह करें। मौजूदा दौर में तो तहक़ीक़ का नाम ही उठता हुआ नज़र आ रहा है। मुक़र्रिरीन ने तो इसे मिट्टी में मिलाने की कोई कसर नहीं छोड़ी। हम शुक्र अदा करते हैं कि उन तमाम उलमा -ए- अहले सुन्नत का जिन्होने इस दौर में भी तहक़ीक़ का

दामन नहीं छोड़ा अगर्चे इसकी वजह से उन्हें कई मुसीबतों और कई लोगों की मुखालिफत का सामना करना पड़ा। अल्लाह त'आला हम गुनहगारों के ऊपर गुयूर उलमा -ए- अहले सुन्नत का आसमान क़ाइम रखे। (आमीन)

अब्दे मुस्तफ़ा

Our Other Pamphlets

Azaan -e- Bilal Aur Suraj Ka Nikalna
(In Urdu And Roman Urdu)
Bahaar -e- Tehreer (5 Parts)
(In Urdu, Roman Urdu And Hindi)
Furooyi Ikhtelafaat Rahmat Hain
Hazrate Owais Qarni Ke Daant
Karbala Se Mutalliq Kuchh Jhoote Waqiyaat
Gaana Bajana Band Karo
Ghaire Sahaba Mein Radiallaho Ta'ala Anho Ka Istemal
Hazrate Bilal Ka Rang Kaala Nahin Tha
Allah Ta'ala Ko Uparwala Ya Allah Miyan Kehna Kaisa?
Bahaar -e- Tehreer (Colorful Edition)
More Pamphlets Coming Soon
Available in Four different languages